विचार बिन्दु

यदि तुम्हारी कोई निंदा करे तो भीतर ही भीतर प्रसन्न होओ,
क्योंकि तुम्हारी निंदा करके वह तुम्हारे पाप अपने ऊपर ले रहा है।
–ब्रह्मानंद सरस्वती

अब सभ्यताओं का नहीं, अर्थ व्यवस्थाओं के बीच संघर्ष का दौर

सूचना, तकनीक और पूंजी के आज के युग में वैश्विक राजनीति का चरित्र तेजी से बदल रहा है। कभी सभ्यताओं, धर्मों या साम्राज्यों के बीच युद्ध होते थे, परंतु 21वीं सदी की दुनिया में यह पूरी तरह बदल रहा है। अब युद्ध हथियारों या विचारधाराओं का नहीं, बल्कि बाज़ार और मुद्रा के प्रभाव क्षेत्र का होने लगा है। अब सभ्यताओं का नहीं, अर्थव्यवस्थाओं के बीच संघर्ष होता है–जहां लक्ष्य भूमि नहीं, बल्कि वैश्विक आर्थिक वर्चस्व है। आज किसी देश की ताकत उसके सैन्य हथियारों से भी बढ़कर उसके जीडीपी, औद्योगिक उत्पादन, स्टार्टअप इकोसिस्टम और तकनीकी प्रभुत्व से मापी जाती है। अब निवेश सम्मेलनों, व्यापार समझौतों और मुद्रा समझौतों से दुनिया के समीकरण तय होते हैं। आधुनिक कूटनीति अब आर्थिक हितों की रखवाली वाली बन चुकी है।यह स्पष्ट हो चुका है कि सभ्यताएं नहीं, बल्कि अर्थव्यवस्थाएं ही वास्तविक शक्ति केंद्र हैं।

सोवियत संघ के पतन के बाद अमरीका अपने को अधिक सुरक्षित होने की अपेक्षा असुरक्षित महसूस कर रहा है और उसके राष्ट्रपति ट्रम्प अपनी अर्थव्यवस्था को बचाने में लगे हैं ताकि दुनिया में अमरीका का वर्चस्व बना रहे। अमरीकी मुद्रा डॉलर सिर्फ भरोसे के बल पर टिकी है। इसे हर अर्थशास्त्री जानता है। मगर इसकी वैश्विक स्वीकार्यता है। डॉलर दुनिया की रिज़र्व करेंसी है। तेल और अन्य अंतर्राष्ट्रीय व्यापार ज़्यादातर डॉलर में होता है, इसलिए इस मुद्रा की मांग बहुत ऊंची बनी रहती है। मगर डॉलर 'फिएट मनी' है, यानी इसकी कीमत सरकार के भरोसे और आर्थिक नीतियों से तय होती है न कि किसी भौतिक आधार के जैसे सोना। अमेरिकी डॉलर को भरोसा मिलता है अमेरिका के वित्तीय प्रभुत्व, तथा वैश्विक व्यापार में उसकी भूमिका से। इसे बनाए रखने के लिए अमरीका हमेशा ऐसा प्रपंच रचता रहता है जिससे उसकी आर्थिक ताकत सुरक्षित रहे और डॉलर मजबूत बना रहे। सभी देख रहे हैं कि अमरीका अपने डॉलर के प्रभुत्व का राजनीतिक हथियार की तरह उपयोग करता रहा है। अमरिका किसी देश पर प्रतिबंध लगा कर उस देश की डॉलर लेन–देन प्रणाली को रोक सकता है। यह उसकी ताकत है। विश्व बाज़ार में डॉलर पर निर्भरता ऐतिहासिक, आर्थिक और राजनीतिक कारणों से है और दुनिया के देशों को व्यापार करते समय इन्हीं कारणों से डॉलर पर निर्भर रहना पड़ता है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जुलाई 1944 में अमरीका में न्यू हैम्पशायर के ब्रेटन वुड्स स्थित माउंट वाशिंगटन होटल में संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन आयोजित किया गया था, जहां 44 देशों के प्रतिनिधियों ने 'ब्रेटन वुड्स प्रणाली' नामक एक नई अंतर्राष्ट्रीय मौद्रिक व्यवस्था स्वीकार की। इस समझौते में तीसरी दुनिया की कोई भागीदारी नहीं थी क्योंकि वे देश तब ब्रिटेन के साम्राज्य के अधीन थे। विश्व युद्ध के कारण पूरा यूरोप ध्वस्त हो चुका था मगर अमरीका उस आंच से बचा रहा था। उस समय अमरिका के पास दुनिया का सबसे बड़ा सोने का भंडार था। इसलिए तय किया गया कि 1/35 औंस सोने का एक डॉलर होगा, और बाकी देश अपनी मुद्राओं को डॉलर से जोड़ेंगे। इस तरह डॉलर विश्व की रिज़र्व करेंसी बन गया। बाद में 1970 के दशक में अमेरिका ने सऊदी अरब और अन्य तेल उत्पादक देशों से अपने निवेश की एवज में समझौता किया कि वे तेल की कीमत डॉलर में तय करेंगे। इससे दुनिया के हर देश को तेल खरीदने के लिए डॉलर की ज़रूरत पड़ने लगी। यह पेट्रोडॉलर सिस्टम कहलाया। इसने डॉलर की अंतरराष्ट्रीय मांग को स्थायी बना दिया। दुनिया के देश अंतर्राष्ट्रीय कारोबार में राशि का निपटान डॉलर में करने लगे। अमेरिकी डॉलर 1/35 औंस सोने की स्थिर विनिमय दर पर परिवर्तनीय था। अमेरिका पर सोने की कीमत स्थिर रखने की ज़िम्मेदारी थी और भविष्य में सोने की परिवर्तनीयता में विश्वास बनाए रखने के लिए उसे डॉलर की आपूर्ति को समायोजित करना पड़ता था। 'ब्रेटन वुड्स प्रणाली' तब तक लागू रही जब तक कि लगातार अमेरिकी भुगतान संतुलन घाटे के कारण डॉलर अमेरिकी सोने के भंडार से अधिक नहीं हो गए, जिसका अर्थ था कि संयुक्त राज्य अमेरिका आधिकारिक मूल्य पर सोने के बदले डॉलर को भुनाने के अपने दायित्व को पूरा नहीं कर पा रहा था। इसलिए अमरीका ने चतुराई की। राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने 1971 में डॉलर को सोने से पूरी तरह अलग कर दिया। उसके बाद डॉलर का मूल्य सोने से नहीं बल्कि अमेरिकी सरकार के भरोसे पर निर्भर हो गया। यह भरोसा अमरीका की अर्थव्यवस्था की ताक़त से बना हुआ है और इसीलिए उसकी वैश्विक स्वीकार्यता बनी हुई है। अब जब विश्व में नई अर्थव्यवस्थाएं महत्वाकांक्षी रूप से उभरने लगी है, अमरीका अपना प्रभुत्व बनाए रखने के लिए छटपटा रहा है। जिसके परिपेक्ष्य में उसके राष्ट्रपति ट्रम्प का व्यवहार समझा जा सकता है। कहते हैं प्यार और युद्ध में सब जायज होता है। ट्रम्प के लिए आर्थिक युद्ध में सब जायज है। उनके लिए अब तक बने वैश्विक नियमों का कोई महत्व नहीं है। वे अब अपनी शर्तों पर नयी वैश्विक अर्थ व्यवस्था बनाने का प्रयास कर रहे हैं। वे अपना आधिपत्य चाहते हैं। वह वैश्विक अर्थव्यवस्था में अमरीकी साम्राज्यवाद चाहते हैं। एक चतुर व्यवसायी की तरह उन्हें लगता है को अमरीकी आर्थिक साम्राज्यवाद को असली चुनौती यूरोप से नहीं बल्कि एशिया से उभर रही भारत और चीन की अर्थव्यवस्थाओं से मिलने वाली है। इस समय जो शतरंज जैसी चालें चली जा रही हैं उन्हें इसी परिपेक्ष्य में बेहतर समझा जा सकता है।

भारत ने ऑस्ट्रेलिया, यूएई, यूरोपीय संघ, और आसियान देशों से मुक्त व्यापार समझौतों पर काम शुरू करके अपने निर्यात बाज़ारों का दायरा बढ़ाने का प्रयास किया है। इस नीति से भारत ने न केवल अपने निर्यातकों के लिए नयी राहें बनाई हैं, बल्कि अमरीकी टैरिफ के प्रभाव को भी काफी हद तक कम किया है। भारत ने अमरीका के साथ आर्थिक युद्ध में विवेक, आत्मनिर्भरता और कूटनीति को अपना हथियार बनाया हैं। यह खींचतान लंबे समय तक चल सकती है।

इन हालात में जहां अमेरिका अपनी डॉलर आधारित अर्थव्यवस्था के वर्चस्व को बनाये रखने की जंग में लगा है। चीन 'मेड इन चाइना' से लेकर 'मेड फॉर वर्ल्ड' तक का सफर तय कर चुका है और अब वह अपनी मुद्रा युआन के अंतरराष्ट्रीयकरण के लिए प्रयत्नशील है। यूरोप यूरो मुद्रा के माध्यम से अपनी वैश्विक व्यापार की ताकत बनाए रखने की जद्दोजहद में लगा है। ऐसे माहौल में अपने आईटी सेवा क्षेत्र तथा 140 करोड़ की आबादी के बड़े बाज़ार के दम पर बढ़ती अर्थव्यवस्था को मजबूत करते हुए भारत भी बड़ी महत्वाकांक्षा लिए उभर रहा है और अमरीका के आर्थिक साम्राज्यवाद को चुनौति चुनौती दे रहा है। अमरीका द्वारा छेड़ा गया टैरिफ युद्ध की केवल व्यापारिक ही नहीं, बल्कि कूटनीतिक भी है। किंतु भारत जिस संयम, दूरदर्शिता और आत्मनिर्भर नीति के साथ इस संकट का सामना कर रहा है उसे अनेक विश्लेषक वैश्विक अर्थव्यवस्था में स्मार्ट डिप्लोमेसी का एक उदाहरण मान रहे हैं। भारत का अमेरिका से आर–पार का व्यापारिक युद्ध छेड़ने से बचना जसकी कूटनीतिक जरूरत है, लेकिन उसने यह संदेश भी स्पष्ट रूप से जरूर दिया है कि वह किसी भी आर्थिक दबाव में झुकने वाला देश नहीं है और संवाद और पारस्परिक सम्मान से ही अमरीका के साथ व्यापारिक संबंध आगे बढ़ सकते हैं। कूटनीतिक संतुलन भारत की आर्थिक परिपक्वता का प्रमाण माना जा रहा है।

अर्थ व्यवस्थाओं की वैश्विक जंग के बीच भारतीय रिज़र्व बैंक ने बहुआयामी रणनीति बनाई है जिसमें महंगे डॉलर रूपांतरणों से बचने के लिए एक सामानंतर गतिशील रुपया–रूबल विनिमय तंत्र विकसित करने, भुगतान पुष्टिकरण प्रणालियां स्थापित करने और वैकल्पिक वित्तीय प्लेटफ़ॉर्म तैयार करने की व्यवस्था है। आरबीआई ने पिछली 5 अगस्त को, अधिकृत डीलर श्रेणी–1 बैंकों को पूर्व अनुमोदन के बिना अपने विदेशी सहयोगी बैंकों के लिए विशेष रुपया वोस्ट्रो खाते खोलने की अनुमति दे दी। फिर 12 अगस्त को उसने नियमों में और ढील दी, जिससे वोस्ट्रो खातों में जमा धनराशि को सरकारी प्रतिभूतियों और ट्रेजरी बिलों में स्वतंत्र रूप से निवेश करने की अनुमति मिल गई। वोस्ट्रो खाता एक घरेलू बैंक खाता होता है जो किसी विदेशी बैंक के लिए स्थानीय मुद्रा में खोला जाता है। विशेषज्ञों का कहना है, "वोस्ट्रो खाता रूस के साथ तेल व्यापार को सुगम बनायेगा क्योंकि यह लेनदेन को डॉलर जैसी तृतीय–पक्ष मुद्राओं के माध्यम से परिवर्तित किए बिना सीधे रुपये में निपटाने की सुविधा प्रदान करता है। तेल क्षेत्र में, रूसी निर्यातक इस व्यवस्था के तहत भारतीय बैंकों के वोस्ट्रो खातों में भारतीय रुपये रख सकते हैं, जिससे भारतीय आयातक डॉलर को दरकिनार करते हुए सीधे रुपये में भुगतान कर सकते हैं। यह व्यवस्था मुद्रा रूपांतरण लागत, विनिमय दर जोखिम और भुगतान में देरी को कम करेगी। रूसी संस्थाएं इस व्यवस्था से प्राप्त अतिरिक्त रुपया शेष राशि को भारतीय सरकारी प्रतिभूतियों, बॉन्ड, इक्विटी और बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं में भी निवेश कर सकेंगी। इसके अलावा, तीसरे देशों के निर्यात के लिए रुपया शेष राशि का उपयोग करने के भी प्रस्ताव हैं, जिससे रूसी आपूर्तिकर्ता अन्य मुद्राओं में भुगतान प्राप्त करते हुए भारतीय सामान खरीद सकेंगे। इसके साथ ही संयुक्त अरब अमीरात को शामिल करते हुए त्रिपक्षीय निपटान तंत्र पर भी बातचीत चल रही है। भारत ने ऑस्ट्रेलिया, यूएई, यूरोपीय संघ, और आसियान देशों से मुक्त व्यापार समझौतों पर काम शुरू करके अपने निर्यात बाज़ारों का दायरा बढ़ाने का प्रयास किया है। इस नीति से भारत ने न केवल अपने निर्यातकों के लिए नयी राहें बनाई हैं, बल्कि अमरीकी टैरिफ के प्रभाव को भी काफी हद तक कम किया है। भारत ने अमरीका के साथ आर्थिक युद्ध में विवेक, आत्मनिर्भरता और कूटनीति को अपना हथियार बनाया हैं। यह खींचतान लंबे समय तक चल सकती है। इससे यह भी संकेत मिलता है कि आने वाले सालों में आर्थिक प्रतिस्पर्धा का नया दौर शुरू हो सकता है। भारत का जनसांख्यिकीय लाभांश उसका इस युद्ध में असली हथियार होगा। अब नया इतिहास अर्थशास्त्री और निवेशक लिखने वाले हैं जो मुद्रा को प्रभावी बनाने वाले योद्धाओं की कहानियां कहेंगे।"

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

गुरु नानकदेव जी

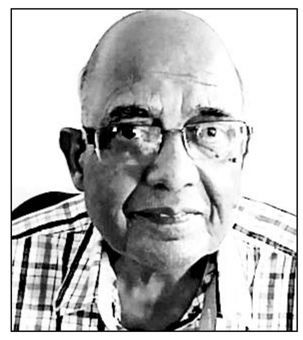

डॉ. जे के गर्ग

गुरु नानक जी ने अपने अनुयायियों को दस उपदेश दिए जो कि सदैव प्रासंगिक बने रहेंगे। गुरु नानक जी की शिक्षा का मूल निचोड़ यही है कि परमात्मा एक, अनन्त, सर्वशक्तिमान और सत्य है। वह सर्वत्र व्याप्त है। मूर्ति–पूजा आदि निरर्थक है। नाम–स्मरण सर्वोपरि तत्त्व है और नाम गुरु के द्वारा ही प्राप्त होता है। गुरु नानक की वाणी भक्ति, ज्ञान और वैराग्य से ओत–प्रोत है। उन्होंने अपने अनुयायियों को जीवन की दस शिक्षाएं दीं जो इस प्रकार हैं।

ईश्वर एक है। ईश्वर सब जगह और प्राणी मात्र में मौजूद है। ईश्वर की भक्ति करने वालों को किसी का भय नहीं रहता। ईमानदारी से और मेहनत कर के उदरपूर्ति करनी चाहिए। बुरा कार्य करने के बारे में न सोचें और न किसी को सताएं। सदैव प्रसन्न रहना चाहिए। ईश्वर से सदा अपने लिए क्षमा मांगनी चाहिए। मेहनत और ईमानदारी की कमाई में से जरूरतमंद को भी कुछ देना चाहिए। सभी स्त्री और पुरुष बराबर हैं। भोजन शरीर को जिंदा रखने के लिए ज़रूरी है पर लोभ–लालच व संग्रह वृत्ति बुरी है। सिख ग्रंथों में उल्लेख मिलता है कि गुरु नानक नित्य बेई नदी में स्नान करने जाया करते थे। एक दिन वे स्नान करने के पश्चात वन में अंतर्ध्यान हो गये। उस समय उन्हें परमात्मा का साक्षात्कार हुआ। परमात्मा ने उन्हें अमृत पिलाया और कहा– "मैं सदैव तुम्हारे साथ हूं, जो तुम्हारे संपर्क में आयेंगे वे भी आनन्दित होंगे। जाओ दान दो, उपासना करो, स्वयं नाम लो और दूसरों से भी नाम स्मरण कराओ।" इस घटना के पश्चात वे अपने परिवार का भार अपने श्वसुर को सौंपकर विचरण करने निकल पड़े और धर्म का प्रचार करने लगे।

उन्हें देश के विभिन्न हिस्सों के साथ ही विदेशों की भी यात्राएं की और जन सेवा का उपदेश दिया। बाद में वे करतारपुर में बस गये और 1521 ई. से 1539 ई. तक वहीं रहे। नानक देवजी ने 25 सितंबर, 1539 को अपना शरीर त्याग दिया था। मृत्यु से पहले उन्होंने अपने शिष्य भाई लहना को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया जो बाद में गुरु अंगद देव के नामसे जाने गये। नानक देव जी ने कहा– "मोन धारण करके नाम जपो, क्योंकि इसी से मानसिक आध्यात्मिक शक्ति मिलती है और आत्मिक शांति भी।"

सिख हमेशा अपनी आमदनी का दसवा हिस्सा दान–पुण्य में खर्च करे।

सच्चाई तो यही है कि गुरु नानक देवजी एक महान दार्शनिक, योगी, गृहस्थ, धर्मधारक, समाजसुधारक, कवि और देशभक्त थे। वे विश्वबंधुत्व में विश्वास करते थे और उनमें सच्ची मानवता के सभी गुण मौजूद थे। उनके बचपन के समय में कई चमत्कारिक घटनाएं घटी जिससे जन साधारण उन्हें दिव्य व्यक्तित्व का स्वामी मानते थे। नानकदेव जी वास्तव में आलोलिक श्रेणी के संत महापुरुष थे। गुरु नानक ने बचपन से ही रूढ़िवादिता के विरुद्ध संघर्ष करना शुरू कर दिया था। वे धर्मप्रचारकों को उनकी खामियां बतलाने के लिए अनेक तीर्थ स्थानों पर पहुंचे और लोगों से धर्मांधता से दूर रहने का आग्रह किया। गुरु नानक जंयती पूरे देश में कार्तिक पूर्णिमा के दिन मनाई जाती है जिसे प्रकाश पर्व के रूप में मनाया जाता है। गुरुनानक सिखों के प्रथम गुरु हैं।

गुरु नानक देवजी का जन्म कार्तिक पूर्णिमा, संवत् 1526 के दिन हुआ था। कुछ इतिहासकार एवं जानकार गुरुनानक की जन्मतिथि 15 अप्रैल, 1469 मानते हैं। नानक जी का जन्म रावी नदी के किनारे स्थित तलवंडी नामक गांव में खत्री कुल में हुआ था। तलवंडी का नाम आगे चलकर नानक के नाम पर ननकाना पड़ गया था। गुरु नानक देव के पिता और माता का का नाम मेहता कालू और तृप्तादेवी था। गुरु नानक को बचपन से ही सांसारिक विषयों में कोई रुची नहीं थी और वे उनसे उनकी उससे विरक्ति थी। उनका अधिकाशं समय आध्यात्मिक चिंतन और सत्संग में व्यतीत होता था। गुरु नानकदेव महान सामाजिक सुधारक थे, उन्होनें सिख धर्म की स्थापना की थी। गुरु नानक जी का विवाह सन् 1487 में माता सुलखनी से हुआ। उनके दो पुत्र थे जिनका नाम श्रीचंद और लक्ष्मीचन्द था। नानक देव जी ने समाज में फैली कुरीतियों को खत्म करने के लिए अनेक यात्राएं की थी। ऐसा कहा जाता है कि नानक देव जी को उनके पिता ने एक बार व्यापार करने के लिए 20 रुपये दिए और कहा 'इन 20 रुपये से सच्चा सौदा करके आओ।' नानक देव जी सौदा करने निकले, रास्ते में उन्हें साधु–संतों की मंडली मिली। नानकदेव जी साधु–संतों को 20 रुपये का भोजन करवा कर वापस लौट आए। पिताजी ने पूछा– 'क्या सौदा करके आए?' उन्होंने कहा– 'साधुओ ईश्वर की सीमाएं और कार्यक्षेत्र संपूर्ण मानव जाति की सोच से परे हैं। सत्य को जानना हर चीज से बड़ा है और उससे भी बड़ा है सच्चाई के साथ आपकी मदद करता है। इसलिए हमें हमेशा दूसरों की मदद के लिए तैयार रहना चाहिये। कर्म भूमि पर फल पाने के लिए कर्म सबको करना पड़ता है। ईश्वर तो सिर्फ लक़ीरें देते हैं पर रंग उनमे हमको ही भरना पड़ेगा है। ईश्वर की हज़ारों आँखें हैं और फिर भी एक भी आँख नहीं। ईश्वर के हज़ारों रूप हैं और फिर भी प्रभुजी निराकार हैं। आप जो भी बीज आज बोयेंगे, उसका फल आपको देर–सबेर जरूर मिलेगा। जब हमारा शरीर मैला हो जाता है तो हम

पानी से उसे साफ़ कर लेते हैं। उसी तरह जब हमारा मन मैला हो जाये तो उसे ईश्वर के जाप और प्रेम द्वारा ही स्वच्छ किया जा सकता है। याद रक्खे कि भगवान के दरबार में सभी कर्मों का लेखा–जोखा रहता है। बिना गुरु के कुछ भी काम अधूरा होता हैं। धन को जेब तक ही रखें उसे हृदय में जगह न दें। जब धन को हृदय में जगह दी जाती है तो सुख शांति के स्थान पर लालच, भेदभाव और बुराइयों का जन्म होता है। धन के भंडार से परिपूर्ण प्रभुत्व वाले सम्राटों की तुलना में वो चींटी महान है जिसके मन में ईश्वर का निवास है। यदि लोग अपने धन का प्रयोग सिर्फ अपने लिए और खजाना भरने के लिए करते हैं तो वह शव की तरह है, लेकिन यदि वे इसे दूसरों के साथ इसे बांटने का निर्णय लेते हैं तो वह प्रभुजी पवित्र प्रसाद बन जाता है। जो व्यक्ति किसी का हक़ छीनता है उसे कही भी सम्मान नहीं मिलता। इसलिए कभी किसी का हक़ नहीं छीनना चाहियें। जिन्होंने प्रेम किया है वो ही लोग परमात्मा को पा सकते है। नानक देव जी के अनुसार एक ओंकार यानी ईश्वर एक है।

गुरु नानक जी की शिक्षा का मूल निचोड़ यही है कि परमात्मा एक, अनन्त, सर्वशक्तिमान और सत्य है। वह सर्वत्र व्याप्त है। मूर्ति–पूजा आदि निरर्थक है। नाम–स्मरण सर्वोपरि तत्त्व है और नाम गुरु के द्वारा ही प्राप्त होता है। गुरु नानक की वाणी भक्ति, ज्ञान और वैराग्य से ओत–प्रोत है। उन्होंने अपने अनुयायियों को जीवन की दस शिक्षाएं दी जो इस प्रकार हैं– "ईश्वर एक है। ईश्वर सब जगह और प्राणी मात्र में मौजूद है। ईश्वर की भक्ति करने वालों को किसी का भय नहीं रहता। ईमानदारी से और मेहनत कर के उदरपूर्ति करनी चाहिए। बुरा कार्य करने के बारे में न सोचें और न किसी को सताएं। सदैव प्रसन्न रहना चाहिए। ईश्वर से सदा अपने लिए क्षमा मांगनी चाहिए। मेहनत और ईमानदारी की कमाई में से जरूरतमंद को भी कुछ देना चाहिए। .सभी स्त्री और पुरुष बराबर हैं। भोजन शरीर को जिंदा रखने के लिए ज़रूरी है पर लोभ–लालच व संग्रह वृत्ति बुरी है।"

–डॉ. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा

स्पानइल मस्कुलर एट्रोफी: मरीजों के लिए किफायती दवा का रास्ता खुला

उच्च न्यायालय के फैसले पर सुप्रीम कोर्ट की मुहर से दवा के दाम में 97 प्रतिशत राहत

विकास आसावत

हाल ही में भारतीय सुप्रीम कोर्ट ने स्विस दवा निर्माता रोश कंपनी द्वारा दिल्ली उच्च न्यायालय के उस आदेश के खिलाफ दायर याचिका को खारिज कर दिया, जिसमें नैटको फार्मा को स्पाइनल मस्कुलर एट्रोफी के इलाज के लिए उपयोग की जाने वाली दवा रिस्डिप्लाम के जेनेरिक संस्करण बनाने और बेचने की अनुमति दी गई थी। इससे पूर्व इसी वर्ष मार्च में दिल्ली हाई कोर्ट की एकल पीठ ने नैटको फार्मा की रोश के रिस्डिप्लाम सम्बंधित पेटेंट की वैधता के समबन्ध में दी गयी दलील को पेटेंट एक्ट के अनुसार प्रथम दृष्टया तर्कपूर्ण माना और पेटेंट को पूर्व में उनके ही जीनस पेटेंट यौगिक का स्पष्ट जैव समस्थानिक संशोधन माना।

साथ ही कोर्ट ने किसी दुर्लभ बीमारी के इलाज के लिए उपलब्ध एकमात्र दवा की आम जनता के लिए बहुत ही किफायती और प्रतिस्पर्धी कीमतों पर उपलब्धता को भी फैसले के लिए महत्वपूर्ण कारक माना था। बाद में डिवीजन बेंच ने भी इसी माह फैसला देते हुए एकल न्यायाधीश के निर्णय में हस्तक्षेप करने से इंकार कर दिया।

उच्च न्यायालय की युगल पीठ के फैसले के बाद नैटको फार्मा ने प्रेस रिलीज़ जारी कर बताया कि कंपनी ने रिस्डिप्लाम के जेनेरिक संस्करण को तुरत प्रभाव से व कोर्ट के समक्ष उसकी मंशा अनुरूप दवा को प्रति बोटल 15,900 में जारी करने का निर्णय लिया जो रोश फार्मा द्वारा एवरिस्डी (रिस्डिप्लाम) की प्रति बोतल कीमत लगभग 6 लाख से 97 प्रतिशत कम है। नैटको ने अपने पेशेंट एक्सेस प्रोग्राम के तहत कुछ अधिक जरूरतमंद मरीजों को इस मूल्य पर भी छूट देने की इच्छा जाहिर की है।

स्पानइल मस्कुलर एट्रोफी (एस.एम.ए.) मांसपेशियों से समबन्धित एक दुर्लभ आनुवंशिक विकार है जो एसएमएन1 जीन की डिफेक्टिव प्रतियों के कारण होता है व मोटर न्यूरॉन्स को प्रभावित करता हैं। मोटर न्यूरॉन्स मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी में विशिष्ट तंत्रिका कोशिकाएँ होती हैं जो चेहरे, बाहों, पैरों, छाती, गले और जीभ की गति को नियंत्रित करती हैं।

साथ ही बोलने, चलने, निगलने और साँस लेने के लिए प्रयुक्त मांसपेशियाँ की गतिविधि को भी नियंत्रित करती है।

आमतौर पर रिपोर्ट की जाने वाली दुर्लभ बीमारियों (ऑर्फ़न डिजीज) में, लाइसोसोमल भंडारण विकार, गौचर रोग, पोम्पे रोग, फैब्री रोग, स्पानइल मस्कुलर एट्रोफी आदि शामिल हैं। नेशनल रजिस्ट्री फॉर रेयर एंड अदर इनहेरिटेड डिसऑर्डर्स में अब तक 18366 दुर्लभ विकार से ग्रसित मरीजों का पंजीकरण हुआ है जो निश्चित ही वास्तविक संख्या से कम है जबकि भारत में ही प्रति वर्ष लगभग 4,000 नवजात एस.एम.ए. डिसऑर्डर के साथ पैदा होते है।

एस.एम.ए. के संभव इलाज में नवीन उपचारों ने रोगियों के लिए दीर्घायु और जीवन की गुणवत्ता में सुधार का अवसर दिखाया है लेकिन दूर–सुदूर क्षेत्रों में विशेषज्ञों की अनुपलब्धता व ट्रीटमेंट का सामर्थ्य के बाहर होने के कारण बहुसंख्यक परिजनों के लिए चुनौतीपूर्ण है।

उक्त वर्णित रोश फार्मा के रिस्डिप्लाम के अतिरिक्त ज़ोल्गेन्स्मा – दो साल से कम उम्र के बच्चों के लिए एक बार दिया जाने वाला एकमात्र स्वीकृत जीन थेरेपी है जिसकी कीमत लगभग 16 करोड़ है, वही इंजेक्शन नुसिनर्सेन (स्पिनराज़ा) भी एक विकल्प है जिसके प्रत्येक डोज़ की कीमत लगभग 87 लाख है, ही अनुमत उपलब्ध इलाज है।

भारत सरकार द्वारा तिरसठ असाध्य रोगों के उत्कृष्टता केंद्रों में उपचार के लिए प्रति रोगी 50 लाख रुपये तक की वित्तीय सहायता भी एस.एम.ए. के इलाज में नाकाफी है जो प्रति मरीज 16 करोड़ से अधिक हो सकती है। इस कमी को पूरा करने के लिए व दानदाताओं द्वारा स्वैच्छिक दान की सुविधा प्रदान लिए सरकार ने पारदर्शी डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म बनाया गया है। इस पोर्टल पर रोगियों से संबंधित जानकारी, रोग, उपचार की अनुमानित लागत और उपचार करने वाले संस्थानों के बैंक खातों का विवरण उपलब्ध है।

आपातकालीन परिस्थितियों के दौरान भारत सरकार पेटेंट एक्ट में उल्लेखित प्रावधानों प्रयोग का करके दवा व सार्वजनिक स्वास्थ्य से सम्बंधित पेटेंट्स को इस्तेमाल कर या कंपल्सरी लाइसेंस प्रक्रिया में लाकर किफायती दामों पर जेनेरिक दवा को जन उपलब्ध उपलब्ध करा सकती है। सांसद श्री हरीस बीरन भी राज्य सभा में भारत सरकार द्वारा धारा 100 के अंतर्गत क़ानूनी छूट देकर जेनेरिक्स के निर्माण को बढ़ावा देने की बात कह चुके है।

कोर्ट का यह निर्णय बौद्धिक संपदा अधिकारों और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्राथमिकताओं के बीच संतुलन बनाने के न्यायपालिका के निरंतर प्रयास को दर्शाता है। भारत पहले ही यूकेएफटीए व इफटीए जैसे मुक्त व्यापार समझौतो से डाटा एक्सक्लूसिविटी को बाहर रखकर, सस्ती दवा तक आसान पहुंच और न्यूनतम समयावधि में जेनेरिक दवा उपलब्ध कराने के प्रति अपनी नीति पर तटस्थता जाहिर कर चूका है। केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन ने भी देश भर के औषधि नियामकों को दुर्लभ रोगों के इलाज के लिए दवाओं और चिकित्सा उपकरणों की स्वीकृति प्रक्रिया में तेजी लाने है व ऐसे सभी आवेदनों पर तीन महीने के भीतर कार्रवाई का निर्देश दिए है। चूँकि सार्वजनिक स्वास्थ्य मुख्य रूप से राज्य का विषय है इसलिए केंद्रीय योजनाओ का प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सख्त निगरानी जरुरी है।

पेटेंट एक्ट द्वारा जन स्वास्थ्य सम्बंधित प्रदत शक्तियों का समय समय पर इष्टतम इस्तेमाल, जेनेरिक्स निर्माताओं के लिए विशेष क्षमता निर्माण कार्यक्रम, दुर्लभ रोगों की दवाओं के नमूनों के सरकारी प्रयोगशाला मूल्यांकन को प्राथमिकता, अंतर्राष्ट्रीय दवा निर्माताओं के साथ साझेदारी, अनुसंधान में अधिक निवेश, न्यायालय के जन स्वास्थ्य व दवा के पेटेंट से सम्बंधित निर्णयों की सख्त पालना, केंद्र व राज्य सरकारों के बीच योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए बेहतर तालमेल, क्राउड फंडिंग के बारे में जागरूकता आदि कुछ ऐसे कदम है जो एस.एम.ए. पीड़ितों के लिए उपचार और उनके गरिमापूर्ण जीवन के लिए मील के पत्थर साबित होंगे।

–विकास आसावत,
पेटेंट अटॉर्नी एवं एडवोकेट

राशिफल बुधवार 5 नवम्बर, 2025

पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, बुधवार, विक्रम संवत 2082, अश्विनी नक्षत्र प्रात: 9:40 तक, सिद्धि योग दिन 11:28 तक, विष्टि करण प्रात: 8:43 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–तुला, चन्द्रमा–मेष, मंगल–वृश्चिक, बुध–वृश्चिक, गुरू–कर्क, शुक्र–तुला, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज राजयोग प्रात: 9:40 से सायं 6:44 तक है। भद्रा प्रात: 8:43 तक है। आज कार्तिक पूर्णिमा, सत्य पूर्णिमा व्रत, गुरू नानक जयन्ती, देव दिवाली है। आज कार्तिक स्नान और भीष्म पंचक व्रत समाप्त होंगे। आज व्यतिपात पुण्य, मन्वादि, त्रिपुरारि पूर्णिमा है। आज अष्टानिका महापर्व पूर्ण होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ–अमृत सूर्योदय से 9:27 तक, शुभ 10:48 से 12:10 तक, चर 2:54 से 4:16 तक, लाभ 4:16 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:43, सूर्यास्त 5:38 तक

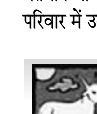

मेष

मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल–आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

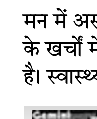

वृष

मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

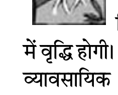

मिथुन

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। घर में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

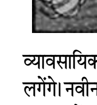

कर्क

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। घर–परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

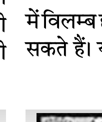

कन्या

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। संभावित धन प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

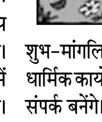

तुला

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। धार्मिक–मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

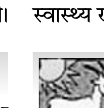

धनु

परिजनों के व्यवहार के कारण दु:ख हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा की स्थिति बनी रहेगी। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

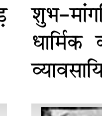

मकर

घर–परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

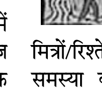

कुंभ

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

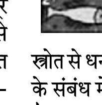

मीन

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच–विचार हो सकता है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।